खरी-खोटी

लेखक—

महाकवि साँड़, पानी पाँड़े, छड़ी बनाम सोंटा,
गुरुघंटाल, टालमटोल, कादम्बिनी
आदि के रचयिता

हास्यरसावतार

पं० कान्तानाथ पाण्डेय 'चोंच' एम. ए. काव्यतीर्थ

प्रकाशक—

चौधरी एण्ड सन्स

प्रकाशक तथा पुस्तक विक्रेता

बनारस सिटी।

प्रथम संस्करण	अप्रैल १९४१	मूल्य १)

प्रकाशक—
चौधरी एण्ड सन्स
पुस्तक विक्रेता तथा प्रकाशक
बनारस सिटी।

मुद्रक—गौरांग प्रेस,
[illegible] रोड, बनारस सिटी।

वक्तव्य

यह पुस्तक हम कुछ और पहिले ही पाठकों के कर-कमलों में रखने के इच्छुक थे, पर पारिवारिक झंझटों के कारण कुछ अप्रत्याशित विलम्ब हो ही गया। जिन उदार पाठकों ने इसके लिए बारम्बार तकाजे किये थे, उनसे हम क्षमा प्रार्थी हैं।

पुस्तक में हड़बड़ी के कारण प्रेस के भूतों को भी कुछ खिलवाड़ करने का अच्छा अवसर मिल गया। पुस्तक के अन्त में उसके लिए उलटफेर दे दिया गया है। पाठक कृपया उसपर भी एक निगाह डाल लें।

हमें पूर्ण विश्वास है कि हम शीघ्र ही हास्यरसावतार 'चोंच' जी के नवीन महाकाव्य 'चूनाघाटी' का नयनाभिराम और मनोरञ्जक संस्करण पाठकों की सेवा में भेंट करेंगे।

—प्रकाशक

समर्पण

अपने प्रिय शिष्यत्रय

कुमार विजयकुमार, कुमार ललितकुमार

तथा

कुमारी प्रियम्वदा

को

हास्यरसावतार



पं० कान्तानाथ पांडे "चोंच"

(एम० ए० काव्यतीर्थ)

वन्दना।

वन्दौं विविध भाँति निज बामा !

जाकी कृपा दस बजे प्रातः मिलै चाय अभिरामा।

जो प्रतिपल पाउडर पोमेडमय, विलसै ललित ललामा।

बारम्बार बसन परिवर्तन-निरत नितान्त निकामा।

'बिल' बिलोकि बन बिनत बदन, बोलत ज्यों विप्रसुदामा

उरिन होइ पुनि रुख न मिलावत, पहलवान बिन गामा।

× × ×

छिन प्रसन्न, छिन रूसि रहत, छिन प्रेम, छिनै संग्रामा।

जाइ माइके लुप्त होत, जिमि होत दलाई लामा॥

कबहुं बिलार सरिस बनि सीधी, करत गिरस्ती कामा।

कबहुं झारिवे हेतु लेकचुर बिगरि बनै थंगामा॥

कबहुं सरल सतुआ समान, पुनि कबहुँक प्रखर पनामा।

भजौं, नमौं, प्रणवौं, विनवौं, नन्दौं, वन्दौं गुन-ग्रामा॥

वन्दौं विविध भाँति निज बामा॥

तुम !

मेरे छन्दों के बन्द बन्द में तुम हो, सखि तुम हो !
तुम सकल साधना के समस्त अविचल हो,
सत्वर धूमिल चिर तपः साध्य उज्ज्वल हो,
जो कुटिल, वक्र, वंकिम, टेढ़ी न सरल हो,
तुम उस विलायती महारवान की दुम हो।
मेरे छन्दों के बन्द बन्द में तुम हो, सखि तुम हो !

× × × ×

मुझ सहनशील के लिए धीर धप्पल हो,
मुझ पनही-प्रिय के लिए चपल चप्पल हो,
चिल्लाता हूँ, बकता अपार विह्वल हो,
पर तुम बैठी, ऐंठी, गाफिल, गुम सुम हो ! मेरे० ?

× × × ×

तुम पी जाती सब चाय मिलाकर शक्कर,
मैं शुष्क बिस्कुटों से लेता हूँ टक्कर !
इस भय से तुम्हें न ले जाता सिनेमा-घर।
धक्कम धक्का में धँसकर कहीं न गुम हो !
मेरे छन्दों के बन्द बन्द में तुम हो, सखि तुम हो !!

खरी-खोटी !

वे खुद न बनेंगे क्योंकर जो,
औरों को बनाया करते हैं।
अखबार के ये शुअरा मेरे,
मज्मून चुराया करते हैं।
है ऐब यही उनमें भारी,
सच बात कभी कहते हैं नहीं।
यह बात बने कैसे क्योंकर,
वह बात बनाया करते हैं।
दिल को जो चुराया करते थे,
साइकिल को चुराया करते हैं।
माशूक जमाने के अबके,
आशिक को बनाया करते हैं।
दफ्तर में मनाते साहब को,
बाजार में बनिया मँगरू को।
भूखे प्यासे फिर रात में हम,
बीबी को मनाया करते हैं॥

हिटलर ने कहीं घाला होगा,
दस पाँच यहूदी लोगों को।
हम बैंकों के डाइरेक्टर हैं,
लाखों का सफ़ाया करते हैं।
ख़त लोग चुरा लेते उनके,
वे तार को पा घबड़ाते हैं।
इससे ससुराल की ख़बरें वे,
वी० पी० से मँगाया करते हैं॥
वे क्यों न कर अब ज़ुल्मो सितम,
क्यों फ़र्ज करें अपना न अदा।
जो नून बनाया करते थे,
क़ानून बनाया करते हैं॥
कालेज में वहाँ जो कुछ देखा,
मत पूछो उसे, क्या कहना है!
प्रोफेसर लेक्चर झाड़ें, लड़के—
प्रोफेसर को बनाया करते हैं॥
दोनों में कभी खटपट न हुई शबको इसका है राज यही।
वे गाल बजाया करतीं जब, ये नाक बजाया करते हैं॥

कहो बेटा !

कहो बेटा !
क्यों न कुछ लिख पढ़ रहे हो, ठीक पथ अब गहो बेटा !
गगन में जैसे सितारे, भवन में जैसे ओसारे,
सुधा में जैसे दुलारे, उस तरह तुम रहो बेटा !
बम्बई में पारसी ज्यों, मेज़ ऊपर आरसी ज्यों,
रेडियो में फ़ारसी ज्यों, उस तरह सुख लहो बेटा !
पढ़ने में श्रम कम पड़ेगा, तो न फल उत्तम पड़ेगा,
हाँकना टमटम पड़ेगा, इसलिए दुख सहो बेटा !
प्रथम श्रम कम कर सहेँ, सब संकटों को घासलेटी,
सदा दंगे के अनन्तर मेल की बनती कमेटी !
पर रहे यह याद तुमसे भूल ऐसी न हो बेटा !
आजकल दुनिया निराली, और उसकी अजब सत्ता,
पाँच सौ वेतन भले हो, सात सौ पर मिले भत्ता !
देखकर अनजान बन चुपचाप यह सब चहो बेटा !
मोटरों की सैर आगे वोटरों का ख़याल जैसे,
दूर है वर्किंग कमेटी से हुआ बंगाल वैसे !

इस तरह के चपल भावों में कभी मत बहो बेटा!
जो तुम्हारी नीति हो, वह स्पष्ट हो सब भाँति जाँची।
मस्त रहकर फलो फूलो, सिन्ध में जब तक कराँची।
क्या न मेरा सुनोगे उपदेश यह तुम अहो बेटा!
कहो बेटा!!

आह !

यदि दो इञ्च और बढ़ जाता !
तो शुचि सुपरडण्ट पदवी पर मैं समोद चढ़ जाता !
पहिले पहल डाँकिया मैं था, प्रेम पत्र पहुंचाता !
पर पहुंचाने से पहिले, मैं था सबको पढ़ जाता !!
इसी हेतु अब उमड़ रहा है प्रेम हृदय में मेरे।
इसे दबा कर पड़ा हुआ हूँ, नहीं कभी कढ़ जाता !
अहो मिलन कैसा सुखदायक होता चारु चिरन्तन।
तुम होतीं किताब, मैं दफ्ती मैं तुममें मढ़ जाता !
यही चाव है, यही हाव है, यही भाव है मेरा,
तुम होतीं हिटलर मैं डाँजिग, चरणों में चढ़ जाता !!

वेदना

कैसे मिलाप होगा ?
तुम आकर्षित करती हो,
चञ्चल हो उठता है मन !
तुम हो हरिजन की बेटी,
मैं हूँ कनौजिया बाभन !
यह बड़ा पाप होगा !
कैसे मिलाप होगा ?

× × ×

दादाजी जो सुन लेंगे,
वे गर्म कान कर देंगे।
चाचाजी यह सुनते ही,
बाहर मकान कर देंगें !
पागल-प्रलाप होगा !
कैसे मिलाप होगा ?

पत्नी जी जो सुन लेंगी,
सर दे मारेंगी अपना।
दमकला तोड़ डालेंगी,
भूखे ही होगा टपना!
सप्तम अलाप होगा!
कैसे मिलाप होगा?

× × ×

बाहर बरामदे में यों,
बैठी हो मुझे बुलाती।
पर मैं भयभीत अमित हूँ,
यह सोच भवन में जाती।
तब छिपा पाप होगा।
कैसे मिलाप होगा?

निराशा !

कसे होगा व्याह हमारा, मैं तो तुमसे छोटा हूँ सखि !
तेरी बिजली ऐसी गति पर, मेरा हृदय होगया लट्ट,
पर तू प्राइवेट कार सरीखी, मैं सड़ियल भाड़ेका टट्टू।
तू चाँदी की चारु तश्तरी, मैं ताँबे का लोटा हूँ सखि !
कैसे होगा व्याह हमारा, मैं तो तुमसे छोटा हूँ सखि !!
तू है आम सफेदा प्यारी, मैं कटहल का कोआ।
तू है परवल-फाँक-लोचना, मैं हूँ पालक सोआ !!
तू बनारसी साड़ी सुन्दर, मैं तो फटा लँगोटा हूँ सखि ?
कैसे होगा व्याह हमारा, मैं तो तुमसे छोटा हूँ सखि !!
मुझे छोड़ तुम नाच रही हो, घर घर तागड़ धिन्ना।
मैं हूँ तुम्हें मनाता जाता, मैं गाँधी तुम जिन्ना !!
तू है चेक हजार रुपये की, मैं तो पैसा खोटा हूँ सखि !
कैसे होगा व्याह हमारा, मैं तो तुमसे छोटा हूँ सखि !!

पूछ-ताछ !

तुम हो प्रिय कहो कौन !
बकबक कुछ करो और, गुमसुम मत रहो मौन !
तुम हो प्रिय कहो कौन !
धरकर उर बीच धीर, अचल अटल रहो वीर,
खाओ खूब खाँड़ खीर, लड़ो भिड़ो पियो नीर,
आओ, करदो प्रसन्न मेरा यह हृदय-भौन।
तुम हो प्रिय कहो कौन !
नयन युगल ज्यों कुरंग, नासा यह ज्यों सुरंग,
उपर विमल ज्यों मृदंग, सरस अमित अंग अंग,
मेरी बस मन पतंग, हित हो तुम मलय पौन !
तुम हो प्रिय कहो कौन ?
सीधी बछिया समान, गोरी खड़िया समान,
पर हो तुम लेती उठा, सर पर निज आसमान,
लगती तब यों हो जैसे फोड़े पर मिर्च नौन !!
तुम हो प्रिय कहो कौन ?

खरी-खोटी

हम दोनों कैसे हों समान।
तुम कृशित काय, हम पहलवान॥
तुम रेशम की रूमाल कलित, मैं जूता फटा पुराना।
मैं कटहल का कोआ कठोर, तुम हो अनार बेदाना॥
तुम राजमहल, मैं हूँ मचान।
तुम कृशित काय, मैं पहलवान॥
मैं घड़ा लोह का हूँ भद्दा, तुम घड़ी मनोहर जेबी।
तुम बी० ए० बी० एच० यू की हो, मैं नहीं जानता ए बी॥
तुम फव्वारा, मैं नाबदान।
तुम कृशितकाय, मैं पहलवान॥
तुम हलुआ सोहन हो ताजा, मैं हूँ गुलगप्पा बासी।
तुम दँतखोदनी चाँदी की हो, मैं हूँ ताला अुन्नासी॥
तुम मुस्टी मैं मूसा महान्।
तुम कृशित काय, मैं पहलवान॥

आश्चर्य !

यार ! प्रियतमा बहुत मुटनी ।
यद्यपि दिन में सात बारही करतीं भोजन पानी ।
नहीं नाम का इनके साया, मिलता है, मैंने ढुँढ़वाया,
इतना तन में .खून समाया, हुई फूलकर तुम्बा काया ।
इनकी कमर नापने में टेलर को भी हैरानी ॥ यार० ॥
दिन भर लेटी कलपाती हैं, कठिनाई से चल पाती हैं,
एक एक यह पग रखने में, श्राह सैकड़ों बल खाती हैं ।
स्प्रिंगदार है कमर लचकती, ज्यों साइकिल जापानी ।
॥ यार० ॥
फूली मानो डबल रोटी हैं, बकतीं सदा खरी खोटी हैं ।
हिटलर के समान हैं तगड़ी, मुसोलिनी ऐसी मोटी हैं ।
मैं तो इन्हें समझता हूँ पूरा अहमद दुर्रानी ॥
लम्बी हैं मानों पोलर हैं, सड़क पीटने का रोलर हैं ।
मेरी सगी सास की बेटी, मेरे तन की कण्ट्रोलर हैं ॥
आँखें लाल टमाटर ऐसी, सदा बहातीं पानी ॥ यार० ॥
अपने एक बार के धक्के से वह मुझे गिरा सकती हैं ।
भैंसों की प्रदर्शिनी में भी पुरस्कार वे पा सकती हैं ।
बहुत फ़ौजदारी करती हैं, होतीं जब दीवानी ॥यार प्रियतमा०॥

थुल थुल पीन पेट है गोरा,
मानो उलटा धरा कमोरा।
अथवा गुड़ हट्टे के अन्दर,
धरा हुआ है गुड़ का बोरा!
चलती हैं, मानों चलती है टटकी भैंस बियानी।
यार प्रियतमा बहुत नुटानी!!

पान की कथा

वह था सुन्दर मगही पान।
गया जिले का था अभिमान!
बढ़ा चढ़ा था गौरव-मान!
उसका कहीं न था उपमान!!

× × ×

सबसे बढ़ियाँ उसका स्वाद!
सड़ता था वह सबके बाद!
मुख के अन्दर जाते ही,
करता था कपड़ा बरबाद!!

× × ×

बड़ा अधिक था उसका दाम!
पीला पीला अति अभिराम!
सुन्दरियों के दाँत ललाम!
उसे चबाते थे अभिराम!!

× × ×

मुँह के अन्दर जाकर यार!
देता था वह खूब बहार!
इसी हेतु खाते धनवान,
कम से कम बीड़े हैं चार!!

× × ×

पनडब्बा उससे सानन्द!
उसमें कत्था चूना बन्द!!
डाल डालकर खूब बरास,
देती है दमाद को सास!!

× × ×

जिसने खाया ऐसा पान!
उसका मुखड़ा खिला निदान!
जिसे पान से होती प्रीति!
उसे नहीं होती भव-भीति!!

× × ×

इसमें पड़ी सुपारी चार।
जैसे सड़कों पर कतवार॥
इसमें सटी लौंग इस भाँति।
जैसे तरु से पत्ती-पाँति॥

× × ×

कितने ही जन खाते पान,
और थूक देते तत्काल!
कितने मुँह के पहिले ही,
कर देते कपड़े हैं लाल!!

× × ×

कितने अपने घर के बीच,
थू थू करते हैं दिन रात!
कितने यों खाते हैं पान,
जैसे बकरी तरु के पात!!

× × ×

मुँह के अन्दर जाकर यार !
देता था वह खूब बहार !
इसी हेतु खाते धनवान,
कम से कम बीड़े हैं चार !!

× × ×

पनडब्बा उससे सानन्द !
उसमें कत्था चूना बन्द !!
डाल डालकर खूब घरास,
देती है दमाद को सास !!

× × ×

जिसने खाया ऐसा पान !
उसका मुखड़ा खिला निदान !
जिसे पान से होती प्रीति !
उसे नहीं होती भव-भीति !!

× × ×

इसमें पड़ी सुपारी चार।
जैसे सड़कों पर कतवार॥
इसमें सटी लौंग इस भाँति।
जैसे तरु से पन्छी-पाँति॥

× × ×

कितने ही जन खाते पान,
और थूक देते तत्काल!
कितने मुँह के पहिले ही,
कर देते कपड़े हैं लाल!!

× × ×

कितने अपने घर के बीच,
थू थू करते हैं दिन रात!
कितने यों खाते हैं पान,
जैसे बकरी तरु के पात!!

× × ×

निराशा का गान !

क्या बताऊँ ?
श्रीमती जी हैं गयी मैंके, चलूँ खाना पकाऊँ।
भूख जोरों से लगी है, वीरता सारी भगी है॥
चलूँ 'नोट्स' तयार करने की जगह चूल्हा जलाऊँ।
क्या बताऊँ !
फूँक मैं चूल्हा रहा हूँ, नहा स्वेदों से गया हूँ।
पर डटा हूँ युद्ध में, कैसा अनोखा वेहया हूँ॥
लकड़ियाँ सब हैं सरस, इनको चलूँ नीरस बनाऊँ।
श्रीमती जी हैं गयीं मैंके, चलूँ खाना पकाऊँ॥
क्या बताऊँ ?

आत्म-ग्लानि !

जीवन में मैं कुछ कर न सका !
कलक्लब में सबकी दावत थी,
दिल्ली से आई टीम एक।
सबके सब खड़े खिलाड़ी थे,
मैं ही था नीम हकीम एक।
वे सब थे लेक्चरबाज़ बड़े,
सब बोले, बेहद चिल्लाए।
मैं स्वागत करने खड़ा हुआ,
पड़ खड़ा रह गया मुँह बाये।
कितना खाँसा जमुहाई ली,
पर दे कुछ भी लेक्चर न सका।
जीवन में मैं कुछ कर न सका॥
साबुन रगड़ा, वैसलीन घिसा,
कितना पाउडर भी मल डाला।
इस अपनी कोमल दाढ़ी को,
ब्लेडों से खूब कुचल डाला।

इतनी सख़्ती से शेव किया,
फट गयीं खूटियाँ बालों की।
फिटकरी लगाकर चीख़ पड़ा,
हो गयी दुर्दशा गालों की।
पर रहा शुद्ध मैं नीलवर्ण,
अब तक भी हो सुन्दर न सका।
जीवन में मैं कुछ कर न सका॥

× × ×

मेरे मित्रों में हैं वकील,
मेरे मित्रों में हैं डाक्टर।
सबने दो चार *चौक वाले,
बनवाये हैं लक्सा पर घर।
मेरी झोपड़ी युगों से है,
यह एक भाव से स्थिर निर्भर।
मैं आज तीस वर्षों से हूँ,
स्कूली मास्टर, प्राइवेट *ट्यूटर।
घर बनवाने की कौन कहे,
कर नया वहीं छप्पर न सका।

जीवन में मैं कुछ कर न सका !!
मिर्चे की धूनी दी कितनी,
लोहबान जलाया तीन सेर।
त्यों धूपबत्तियाँ जलवायीं,
छा गया धुयें का ख़ूब ढेर।
मसहरियाँ टँगवायी दो दो,
कितनी जलेबियाँ जलवायीं।
"फिलट" का भी किया प्रयोग ख़ूब,
पत्तियाँ नीम की सुलगायीं।
पर सोते समय अहा ! देखा,
हो दूर एक मच्छर न सका !
जीवन में मैं कुछ कर न सका !!

वन्दना

वन्दौं कांगरेसी राज !
कृपा पाकर जाहि की सब ओर सुख का साज।
सब प्रजा इमि है सुखी, ज्यों पटक पाकर बाज।
या कि भादों तीज आये, सुखी होहिं बजाज।
बढ़ा सुख ज्यों सोप में से बढ़े अतुलित गाज।
देख ग्रामसुधार का यह परम अद्भुत काज।
हो रहा हर्षित हृदय में सभी लण्ठ-समाज॥
पारसी मदिरा-रहित रोवैं विविध विधि आज।
क्यों करैं मधुपान जो उन्माद-ग्रस्त अलाज।
बढ़ैं यों नेता हमारे सभी बेअन्दाज।
आजकल ज्यों मूलधन से बढ़ा करता ब्याज॥
वन्दौं कांगरेसी राज !!

जब चोर भवन में घुस आये !

था वह निशीथ का समय, विश्व सोया था टाँगें फैलाए।
मैं भी था सिनेमा से लौटा, पी चुका दूध जो था औटा,
श्रीमती सो रही थीं, सोचा, अब कौन उन्हें यों जगवाये।
जब चोर भवन में घुस आये॥
लेटा ही था जब सुन खटपट, मैं चौंक पड़ा उठकर चटपट,
घुस पड़ा चारपाई के फिर नीचे, ज्यों घुसते चौपाए।
जब चोर भवन में घुस आये॥

× × ×

साहस न हुआ दाबूँ मैं स्विच, यह कौन करे नाहक किचकिच,
काँपता रहा मैं यों अपार, ज्यों ज्वर मलेरिया चढ़ आये।
जब चोर भवन में घुस आये॥
मेरे कम्पन से हिली खाट, हिल पड़ीं श्रीमती जी सपाट,
फिर उठीं दबाया स्विच सत्वर, मैं रहा शान्त निज मुँह बाये!
जब चोर भवन में घुस आये!!

× × ×

ले जलेबी !

ले जलेबी !
पावभर के चार पैसे !
इधर लाओ यार पैसे !
तुम खरीदो और खाओ,
खाँय बीबी और बेबी !! ले जलेबी !
यह मधुरता से भरी है,
है नहीं बासी, खरी है।
जिस तरह भाषा हमारी
है न उर्दू, नागरी है !
लो खरीदो, शीघ्र लाओ दिव्य तुम अपनी रिकेबी ! ले० !
हाय ! भारत के निवासी,
खा रहे मिष्टान्न बासी !
लग रहे इस हेतु ही हैं
बीस ही में वे पचासी !
और इस कारण भयानक हो रहे कपटी फरेबी ! ले जलेबी !

हाय महिलाएँ अनाड़ी,
बदलती हैं रोज साड़ी।
सेएट स्नो हैंजलीन मण्डित,
वदन, मानो चढ़ी माड़ी।
रिष्टवाच वनी हुई हैं जो कभी थीं बड़ी जेबी! ले जलेबी!
रोज पीतीं चाय हैं ये,
इसी से कृश-काय हैं ये,
और निज स्वातन्त्र्य के,
संग्राम में निरुपाय हैं ये?
यदि जलेबी का करें जलपान तो हो जाँय गोपी,
और इनके पद-निकट पतिदेव रखदें शीघ्र टोपी!
मस्त गामा बन सकेंगी
भव्य भामा बन सकेंगी
दूर कर आलस्य, तेजी—
में पनामा बन सकेंगी
इसलिए उनको खिलाओ नित्य निष्ठा से जलेबी! ले जलेबी!

शांति !

आज मुझे है सिनेमा जाना !
होटल से मैं खा आऊँगी, स्वयं पका लेना तुम खाना।
जल्द वहाँ से तुम उतार कर लादो मेरी साड़ी।
छ बजने में सात मिनट हैं मँगवा दो अब गाड़ी।
अगर लौटने में हो देरी, तो तुम नहीं तनिक घबड़ाना।
आज मुझे है सिनेमा जाना !!
दस बजने के पहले प्यारे, झपकी भी तुम ले न सकोगे।
भले याद आया, हाँ मुझको रुपये क्या कुछ दे न सकोगे?
अगर जग पड़े मुन्नी बेटी, थपकी देकर उसे सुलाना।
आज मुझे है सिनेमा जाना !!
बहुत शोर सुनती हूँ, घर घर इस 'पुकार' का धूम धड़का।
पर मैं इसे देख लूँ पहले, तब होगा कुछ निश्चय पक्का।
फिर तुम भी देखना नहीं तो शायद पड़े तुम्हें पछताना ?
आज मुझे है सिनेमा जाना !

अनुनय !

लारी वाले ! लारी वाले !!
रुक जा, रुक जा, ओ मतवाले !!
दो हाथ उठाए खड़ा हुआ,
हूँ राह बीच यों अड़ा हुआ,
फिर भी तू निकल गया कैसे,
यह तो गड़बड़ है बड़ा हुआ !
वापस आ, मुझको बैठाले !
लारी वाले, लारी वाले !!

× × ×

तू दूर भगा ऐसे सर से,
जैसे चपरासी अफसर से।
अथवा जैसे गाँधीवादी,
भागें श्रीयुत सावरकर से।
क्या तू है कुछ ज्यादा ढाले !
लारी वाले, लारी वाले !!

× × ×

तू भागा यों तागड़ धिन्ना,
गाँधी से ज्यों भागें जिन्ना।
तेरा यह लखकर पाजीपन,
खोपड़ी गयी मेरी भिन्ना !!
ले प्रथम नकद यह पैसा ले !
लारी वाले, लारी वाले !!

× × ×

यों गर्द उड़ाता चला गया
अफसोस, भगाता चला गया !
तू आज हमारे हाथों में
बस आता आता चला गया।
अब मान हमारा कहना ले।
लारी वाले, लारी वाले !!

× × ×

तेरे हाथों में गाड़ी है,
तेरे हाथों में है नकेल !
जैसे कॉंग्रेस को हथिया कर,
बैठे गाँधी हैं औ पटेल !!

जा उनसे भी कुछ शिक्षा ले !
लारी वाले ! लारी वाले !!

× × ×

रुक ओ उतावले ! तू रुक जा !
ओ विकट बावले ! तू रुक जा !
कैसे निभ पावेगा जग में
ऐसा स्वभाव ले ! तू रुक जा !!
अपने मन को कुछ समझा ले।
लारी वाले ! लारी वाले !!

× × ×

अच्छा जाता है तो चल जा।
हट दूर सामने से, टल जा।
बँगले पर मुझको जाना था।
यह साग मुझे पहुँचाना था !
कैसे तेरे करतब काले।
लारी वाले ! लारी वाले !!

× × ×

अच्छा, अब चला गया ही तू,
यह रही दिल्लगी भी खासी।
पर याद रहे मैं भी तो हूँ,
दारोगा जी का चपरासी।
आना बच्चू हर्जाना ले।
लारी वाले, लारी वाले॥

रिक्शा !

रिक्शे का मजा, रिक्शे का मजा !!
जाना था कवि-सम्मेलन में,
मुझको कल साढ़े चार बजे ।
इसलिए ठाट से सजधज कर,
मैं पाँच बजे निकला घर से !

× × ×

सोचा अब कौन सवारी लूँ,
एक्का लूँ या कर लूँ टमटम ।
अथवा टैक्सी ही क्यों न करूँ,
पर चार्ज करे भाड़ा जो कम ।

× × ×

फिर सोचा—क्यों न करूँ रिक्शा,
सुनता हूँ जाता तेज बड़ा ।
साइकिल समान ही जावेगा,
साइकिल का इसका साथ पड़ा !!

× × ×

इसलिये किया रिक्शा मैंने,
हो गया समुद उसपर सवार।
चल पड़ा वेग से अकस्मात्,
वह धूम-धाम से धुआँधार !!

× × ×

पर अभी गया दस गज होगा,
यह क्या, गाड़ी क्यों हुई विकल।
उफ़, पीछे की पहिये से थी,
सब हवा यकायक गयी निकल।

× × ×

कुछ दूर घसीटा हाथों से,
रिक्शे वाले ने लगा जोर।
फिर साइकिल की दूकान देख,
लग गया मचाने बड़ा शोर !!

× × ×

फिर हवा भरी, आगे सरका,
तय किया रास्ता एक मील।
यह क्या, 'सर सर सर सर' की यह,
कैसी ध्वनि निकली प्रिय सलील!!

× × ×

उतरा रिक्शेवाला चट से,
देखा 'स्वभूमि-वञ्चिता वेन'!
पीछे से जाकर लेट गया,
यों ठीक किया उसको 'अगेन'।

× × ×

फिर बढ़े, चले कुछ दूर और,
इस भाँति बजाते जय-डंका।
तब तक उतरा रिक्शेवाला,
बोला—करनी है लघुशंका!

× × ×

अच्छा! इससे भी निपट चुके,
कुछ और बढ़े, आगे आये!
तब तक भेलूपुर से देखा,
दो साँड़ चले भागे आये।

× × ×

साँड़ों का अवलोकन ही कर,
रिक्शे वाला तो कूद भगा।
मैं बैठा सही सलामत था,
संकटमोचन के ध्यान पगा!!

× × ×

पहुँचा जब कवि-सम्मेलन में,
था वह समाप्त, था आठ बजा!
मैं पैदल ही लौटा, पढ़ते—
रिक्शे का मजा, रिक्शे का मजा!

× × ×

वह पगध्वनि मेरी पहिचानी !

कोमल फूलों के दल ऐसे,
मंजुल मोदक मगदल ऐसे,
चप्पल चुम्बित वे चारु चरन,
अतिशय प्रफुल्ल कर देते मन,
जब जाती थीं कालेज को वे, छवि छिटकाती मृदु मस्तानी!
वह पगध्वनि मेरी पहिचानी !!

× × ×

लारी पर थीं जाया करतीं,
मुझको थीं हुलसाया करतीं,
जिन्ना-सी मुझको तड़पातीं,
वे आ आकर थीं चल जातीं।
पर दैवयोग का कहना क्या !
जैसे सोनार को गहना क्या!
आये उनको लेकर पत्री, एक दिन पण्डितजी विज्ञानी।
वह पगध्वनि मेरी पहिचानी।

× × ×

मैं शौहर, वे होगयीं तिया,
ज्यों नौकर के सरपर खँचिया।
मुझसे अब भी थीं खिंची हुई,
जैसे टर्की से है रशिया।

आयी फिर मधुर सोहागरात!
हो गयी मधुर दो चार बात!

फिर क्या कहना, सन्तुष्ट हुईं, बोलने लगीं कोयल बानी!
वह पगध्वनि मेरी पहिचानी!

× × ×

कुछ मन्द मन्द मुस्करा चलीं,
आँखों से दिल को चुरा चलीं।
मानों मुझको कोहँड़ा समझीं,
इसलिये फेरती छुरा चलीं॥

रूठना, झगड़ना, मान-ठान,
फिर मुझे मनाना प्रेम-दान,
इस भाँति स्नेह के कलह विविध,
चल पड़े सरल सात्विक महान्।

मैं अपने इस आनन्द मदिर, सुख ऊपर था अभिमानी।
वह पगध्वनि मेरी पहिचानी!

पर विश्व अमित परिवर्तनमय।
जैसे रसोइयाँ बर्तनमय !!

× × ×

विजया की गोली अब तक थीं,
बम का अब गोला बन बैठीं।
जो सोफ़ा थीं वे अकस्मात
अब उड़नखटोला बन बैठीं॥

जाने मुझमें था कौन भाव,
देखा जो ऐसा मनमुटाव।
कर बैठीं, मैं क्या बतलाऊँ
होगया अजब उनका स्वभाव॥

दिन भर किटकिट करती रहतीं,
ज्यों लड़ते चीनी जापानी!
वह पगध्वनि मेरी पहिचानी!

× × ×

'महिला मण्डल' की मीटिंग का,
पाकर चिर-वांछित आमन्त्रण।
दे रहा वहाँ जाकर मैं था,
दिल से 'तलाक बिल' पर भाषण।
मुदमय मैं था, उत्साहभरा,
इतने में हुआ चित्त वेकल।
कारण, कानों में आ पहुंची,
सुस्पष्ट हुई जाती प्रतिपल।
खटखट खटखट सीढ़ियाँ डाँक,
चटपट अति भीषण मनमानी—
वह पगध्वनि मेरी पहिचानी!!

पत्नी जी कमरे में आयीं,
कुछ क्रुद्ध हुईं, कुछ मुस्कायीं।
दर्शक समूह की ओर देख,
फिर मुझे देखकर गुर्रायीं।
चलने का कर संकेत मुझे,
चल पड़ीं, चला मैं अनुगामी।
ज्यों साहब के पीछे पीछे,
बँगले में चलता है टामी।
इस भाँति सफल हो सकी,
दूर करने में मेरी नादानी—
वह पगध्वनि मेरी पहिचानी !!

स्वागत !

श्रीमान् सभापति जी आये !
कविताएँ तुम्हें सुनाएँगे,
चुपचाप सुनो तुम मुँह बाए !
श्रीमान् सभापति जी आये !

कवियों में प्रथम कहाते हैं,
सबसे ऊपर चिल्लाते हैं।
समझें यह कविता खाक नहीं,
पर सर यह खूब हिलाते हैं।
मानो हैं पीकर बौराये !
श्रीमान् सभापति जी आये !

रो रही हैं !

मैं मनाता जा रहा हूँ, तीव्रतर वे हो रही हैं ! रो रही हैं !
कल कचौड़ीगली जाकर, पाव भर पूरी उड़ाकर,
खर्च पैसे कर दिये सब, चाय पीकर पान खाकर,
इसीसे पाजी अवारा नीच कह मुझको रही हैं !
रो रही हैं !
स्वयं सुर्ती सेर भर फाँकें, नहीं कुछ भी बुराई,
पान के घर खेत भी जावेँ, न फिर भी दोष भाई !
किन्तु मेरा एक सिगरेट देख सुध बुध खो रही हैं !
रो रही हैं !
शान्ति रखने में चचा हूँ आह ! चेम्बरलेन का भी !
पर निरख कर मान उनका, हार मानै मेनका भी !
बात यह है आजकल वे पी बहुत कोको रही हैं !
रो रही हैं !

त्राहिमाम !

मेरे पास दिल एक है, मैं किसे दूँ,
अजब आज यह बात आकर बनी है।
इधर घर में बचऊ की माँ जोर मारें,
इधर क्लब में घातक य' मिस मोहिनी है।
उधर कच्चों बच्चों की वह चिल्लपों है,
इधर काम के फौज की छावनी है।
इधर पढ़ रही मोहनी है 'ओथेलो'
उधर उसके मुँह पर शिवा बावनी है।
है यह दिल न मेरा, है पोलैण्ड गोया,
उधर रूस है तो इधर जर्मनी है।
बचाओ चचा ऐ चेम्बरलेन इसको,
गजब गुण्डई है, अजब रहजनी है !!

मैं ही मालिक मधुशाला हूँ !

मैं ही मालिक मधुशाला हूँ।
मेरी मधुशाला में आकर, कितने लीडर, कितने महान्।
सुन्दरियों को संग में लाकर, करते हैं साग्रह सुरा-पान॥
मैं उन सबका रखवाला हूँ।
मैं ही मालिक मधुशाला हूँ॥

× × ×

मेरी मधुशाला में आकर पण्डित जी ठर्रा उड़ा रहे।
अपने पितरों को एक साथ, भव-बन्धन से हैं छुड़ा रहे॥
मैं ही उनकी गोशाला हूँ।
मैं ही मालिक मधुशाला हूँ॥

× × ×

मेरी मधुशाला में कितने, प्रोफेसर, डाक्टर, मास्टर, वकील।
पीकर जब मस्ती में आते, तब बन जाते हैं कोल भील॥
नव सृष्टि बनाने वाला हूँ।
मैं ही मालिक मधुशाला हूँ॥

× × × ×

जिनको दिनभर लेक्चर देते,
सुनियेगा मदिरा के खिलाफ़।
उनको निशीथ में आकर के,
देखिये कर रहे हाँथ साफ़॥
मैं वह गड़बड़घोटाला हूँ।
मैं ही मालिक मधुशाला हूँ॥

प्रभात-वर्णन !

तारक समान अन्य मतों को पछाड़कर,
कमलालयों को श्री-प्रकाश का पहाड़कर।
सूरज गगन से यों कढ़ा तम-तोम फाड़कर,
ज्यों 'आज' के दफ्तर से निकलते पराड़कर !!

× × ×

पक्षी सभी चहक उठे, डैने पसार कर !
औ धूमधाम से हैं वेगवान बढ़ रहे !
जैसे कि कवि समाज में 'मोटिल' सुकवि बहुत,
कविता हों छायावाद की गा गाके पढ़ रहे !

× × ×

सूरज की लाली रही ललित गगन यों छाय।
ज्यों मिस-कलित कपोल पर, पाउडर रह्यो सुहाय !!

× × ×

रे !

क्यों तू उदरदरी में इतने ठूँस रहा है भूप !
क्यों सब रबड़ी और मलाई चाट गया रे मूप !
हम सब हेरा करे ! रे !!
माल मिला है तुझे पराया,
इससे तूने किया सफाया !
तीन पचीस खा गया पूरी,
पर चेहरे पर शिकन न लाया !
यह कैसा ढब रे ! रे !!
कोटि कोटि कीटाणु उड़ रहे,
आह पवन के अटल पटल पर !
और मक्षिका-दल के हमले,
हुए हजारों तव पत्तल पर !!
ओ जाहिल जबरे ! रे !!
कुटिल ! कॉलेरा-प्रूफ सरीखा,
तू बैठा है मार पालथी !
क्या यह पूर्व जन्म में तेरी,
उदर-दरी चौपाल-पाल थी !

अब तो कुछ थक रे! रे!!
आँखें निकल सी रहीं तेरी,
स्वेद-धार से नहा रहा है!
तोंद फटेगी अब यह तेरी,
ले डकार तू महा रहा है!
ओ बलि के बकरे! रे!!

खो गया लोटा हमारा !

खो गया लोटा हमारा !
हुआ ज्यों घर से रवाना, रास्ते में मिला काना,
और टकराते बचा एक साँड़ से रिक्शा हमारा !
बढ़ा फिर कुछ और आगे, मिले कुछ लँगड़े अभागे,
खोजने मैं लगा—खोया, किस तरह बस्ता हमारा !
खो गया लोटा हमारा० !

घाटू !

अखबार पढ़ने का मज़ा जिसकी ज़बाँ पर आ गया,
खर्च पैसा हो गया, कतवार घर में छा गया !

× × ×

मेरे घर पै एक बलिया से था आया मेहमान,
एक ही वह साँस में दो सेर सतुआ खा गया !

× × ×

जब कभी मैंने किया उस मिस से 'मैरेज' को 'प्रपोज',
कनखियों से देखकर, बातों में ही टरका गया !

× × ×

बात यह थी, जो कि भागा आपके मैं पास से,
आपकी बातों से था मैं बेतरह घबड़ा गया !

× × ×

कवि का सत्कार

खी खी खी खी खी खी खी खी

कल कविता मैं लिखने बैठा,
इतने में पत्नी जी आयीं।
लिखने में मुझको मग्न देख,
कुछ क्रुद्ध हुईं कुछ मुसकायीं!
फिर क्या जाने क्या सोच हँसीं, खी खी खी खी खी खी खी खी

फिर तड़प उठीं "ए! ओ! कविजी,
यह लिखा जा रहा है क्या क्या?
उसका उत्तर तो लिखा नहीं,
जो खत आया था काका का!
यह कह पेंसिल को नोच हँसीं, खी खी खी खी खी खी खी खी

लकड़ीवाली कल आयी थी,
उसको देने पैसे होंगे।
रोटी तरकारी दाल भात,
लकड़ी विहीन कैसे होंगे?
कविता का कागज छीन हँसीं, खी खी खी खी खी खी खी खी

कल कितना तुम्हें तिखारा था,
फिर भी लाये तुम पान नहीं।
मुझको क्या, उहँ सन्ध्या को खुद,
पाओगे कुछ जलपान नहीं।
यों मुझे बनाती दीन हँसीं, खी खी खी खी खी खी खी खी!

अपनी करनी का जिक्र नहीं,
सब कुछ मुझपर लिख देते हो।
मेरे रूठने झगड़ने का,
कैसा यह बदला लेते हो।
'खल हो' कह यों किलकार हँसीं, खी खी खी खी खी खी खी खी,

मैं तब उनके पद-पद्म चूम,
बोला अपराध मे क्षमस्व।
दैया रे! यह क्या? कह झिझकीं,
वह दीर्घ क्रोध होगया ह्रस्व।
फिर खूब कलैया मार हँसीं, खी खी खी खी खी खी खी खी!

कैसे ?

तेरे घर के द्वार बहुत हैं किससे होकर आऊँ मैं ?

काशी टाकी के समीप सब खुमचेवाले खड़े हुए हैं,
बिड़ी बनानेवाले सिनेमा टिकट बेंचते अड़े हुए हैं,
नहीं तनिक भी ये सुनते हैं, कितना भी चिल्लाऊँ मैं। तेरे० ॥

गोदौलिया पर इक्केवाले, और चौक में रिक्शेवाले,
थाने के सामने सटे हैं, मेवेवाले गमछे वाले,
इनका उल्लंघन दुरूह है, देख देख घबड़ाऊँ मैं ॥ तेरे० ॥

सट्टी में ऊँटों का मेला, बैलगाड़ियों का भी रेला,
और जतनबर पर ठेलेवाला रोके अपना है ठेला,
समझाने से नहीं मानता फिर कैसे समझाऊँ मैं ॥ तेरे० ॥

सभी पटरियों पर दवाइयों के विक्रेता पड़े हुए हैं,
घाट सीढ़ियों पर भिखमंगे मानों उनमें जड़े हुए हैं,
चौखम्भा में साँड़ खड़े हैं, कैसे उन्हें हटाऊँ मैं।
तेरे घर के द्वार बहुत हैं किससे होकर आऊँ मैं।

बहकी बातें !

गुलों से खार अच्छे हैं, जो दामन थाम लेते हैं।
हैं कैसे सख्त दिल मालिक, जो तुमसे काम लेते हैं॥

× × ×

उन्होंने हिज्र में खाना औ पीना छोड़ रक्खा है।
महज़ दो सेर चेदाना सुबह औ शाम लेते हैं॥

× × ×

हमें उस मिस की सूरत याद आजाती है दम भर में।
जभी हम अपने हाथों में य' लँगड़ा आम लेते हैं॥

× × ×

लबों पर मुस्कराहट को उमड़ने से दबाते हैं।
क़सम खाने को जब हाथों में शालिग्राम लेते हैं॥

× × ×

य' जब देखो मेरी दाढ़ी बढ़ी रहती है दुम ऐसी,
मेरी तनख्वाह की आधी रक़म हज्जाम लेते हैं॥

× × ×

खरी-खोटी

वेतन के ऊपर कर सवार
पत्नी जी हैं सर पर सवार
कटजू जी से पूछे कोई,
है क्या उनके ऊपर सवार !!

× × ×

सुखी हर तरह से मेरा दिले नाशाद बन जाता।
थ' रुपया इस तरह करना मेरा बरबाद बन जाता॥
मेरी कुछ ग्रेड बढ़ जाती, मैं आजाता सेलेक्शन में,
अगर ऐ मिस, तुम्हारे बाप का दामाद बन जाता !!

× × ×

जिस तरह पूरी को आँटा चाहिए।
जिस तरह छूरी को काँटा चाहिए॥
मेरी सुनकर आरजू उसने कहा,—
"जल्द तुमको एक चाँटा चाहिए"॥

× × ×

खरी-खोटी

मुँह में कुछ है और, मन में और है।
आपका कैसा अजब यह तौर है॥
हाथ में तो चान्द्र है पञ्चांग यह;
काम करने के लिए पर सौर है!!

× × ×

सफ़र में जैसे कि लोटा चाहिए!
चींटियों को जैसे चोटा चाहिए॥
उस तरह अब बैंक वालों को सभी,
हर तरह हर ओर टोटा चाहिए!

× × ×

जिस तरह जूतों में बाटा की क़दर,
जिस तरह है टिन में टाटा की क़दर।
उस तरह अब मुल्कवालों की जगह,
हो रही पूरे सपाटा की क़दर।

× × ×

उनके आँगन में हरी घास !

घर उसे न सकते हैं सत्वर, पिल पड़ें गधे जो सौ पचास।
उनके आँगन में हरी घास !

पाकर प्रभात-रवि के मयूख,
खिल उठी, गयी थी जो कि सूख।
जैसे कि कचौड़ी गली निकट,
मुंशी जी की जागती भूख।
चेहरा खिल उठता है उदास !
उनके आँगन में हरी घास !!

झोंके समीर के खाकर भी,
रहती है यह नीरव नितान्त !
जैसे गाली सुन सुनकर भी,
रहता पटवारी परम शान्त।
होवै यदि पैसे का सुपास।
उनके आँगन में हरी घास॥

औरों के आँगन सूख रहे,
झङ्खाड़ झाड़ के हैं पहाड़।
औरों के आँगन हुए भग्न,
हो गये नष्ट, अब हैं उजाड़!

पर हैं इसमें क्या बात खास।
उनके आँगन में हरी घास!!

यह तो हरियाली आँगन में,
प्रतिपल भरती ही जाती है।
सेठों की तोंद समान नित्य,
उन्नति ही करती जाती है।
इसका व्यापक वैभव-विलास।
उनके आँगन में हरी घास!!

घसियारों से डरती न कभी,
हथियारों से डरती न कभी।
जैसे कि सिपाही की बीवी,
मुख़्तारों से डरती न कभी।
है कभी नहीं रहती उदास।
उनके आँगन में हरी घास!!

पानी इसपर कितना बरसा,
हैं, चले और कितने फ़रसा।
पर यह हँसती ही खड़ी रही,
हँथियारों को तरसा तरसा!
उर में इसके कुछ नहीं त्रास!
उनके आँगन में हरी घास!!

आँगन से यों है सटी हुई,
ज्यों सटे विभीषण से सुखेन !
अथवा जैसे हैं सटे हुए,
अब दलादिये से चेम्बरलेन !
या ज्यों दमाद से ससुर सास ! उनके० ।
यों बढ़ी हुई है बेहिसाब,
छेंके यह सब आँगन विशाल ।
छायावादी कवि के सिर पर,
जैसे बढ़ते हों घने बाल ।
ज्यों बढ़े एडीटर की छपास । उनके० ॥

सब गिरें पड़ें यह रहे अटल,
यदि हो विनष्ट तब भी सहास ।
सर हैरी ने जाते जाते,
ज्यों किया टेनेन्सी ऐक्ट पास ।
पावे यह विक्टोरिया क्रास ! उनके० ॥
तरु-पतित पत्तियों को चरने,
आकर इसको भी चरते खर !
गुण्डों के करनी के कारण,
म्यूनिटिव टैक्स दें सीधे नर !
देखें बाबू भगवान दास ! उनके० ॥

प्रिय प्रवास

दिवस का अवसान समीप था,
गगन था कुछ लोहित हो चला।
धरहरों पर थी अब छा रही,
मिसेज़ लोटस के प्रिय की प्रभा !!

गगन जो दिन में नवनील था,
बदल रंग हुआ अब लाल यों।
पठित कालेज के लड़के सभी,
बदलते कपड़े दस बार ज्यों !!

पशु-नुमायश अन्दर हो रहा,
अजब ज्यों घनघोर मुशायरा।
ध्वनिमयी विविधा विहगावली,
उड़ रही नभ-मण्डल मध्य थी !

× × ×

फिर लगी घटने नभ-लालिमा,
मिट गयी नभ से रवि की छटा!
वदन से कलि में अब मुच्छ है,
मिट रही है जिस भाँति सफ़ाचटा ॥

चली गयी नभ से इस भाँति थी,
छवि अपार दिनेश प्रकाश की।
अलग कांग्रेस से पल में हुई,
सकल ज्यों अब राय सुभाष की !!

इस प्रकार खिलीं तरु डालियाँ,
जब पड़ी उनपै रवि-रश्मियाँ।
जिस प्रकार सुनाकर गालियाँ,
परम हर्षित फ़ज़्लुलहक़ मियाँ ॥

इधर तारक भी निकले कई,
कुछ प्रकाश दिखा अपनी चले!
विविध ज्यों इस काँग्रेस राज्य में,
निकलते अख़बार नये-नये !!

× × ×

प्रार्थना !

अब तो तज मानिनी मान को तू !
कर में क्यों लिए पदत्रान को तू !

नयनों में नशा भरा भंग का है,
यह ठाठ अनोखा कुरंग का है।
पर याद रहे हम दम्पति में,
दृढ़ नाता परेता पतंग का है।

मुख पै अब ला मुसकान को तू !
कर में क्यों लिए पदत्रान को तू !!

क्यों ?

कांग्रेस और लाट की बातें, कांग्रेस और लाट ही जानें।
राजनीति के उलट फेर को, मिस्टर खरे घाट ही जानें।
लेखक बन बैठे हैं लड़के उपन्यास औ' कहानियों के,
पर भाषा से असहयोग है, और न पूर्ण प्लाट ही जानें!

× × ×

बोलीं वे मुझको देख के, आँखें निकाल कर,
बहकी क्यों बक रहा है, क्या आया है ढाल कर!
बोला मैं—"काँपती हैं क्यों, जूड़ी है क्या चढ़ी।
थोड़ा सा जाके पीजिये पानी उबाल कर!!

× × ×

बिल्कुल अजीब आपका कैसा स्वभाव है।
दुनियाँ से आपको नहीं कुछ भी दुराव है।
है सामने धरा हुआ बगड़ा उबाल कर,
कहते हैं आप "कैसा यह बढ़ियाँ पुलाव है!!"

पैरोडी।

गूँजी सब सट्टी भर में, 'अरुई, मुरई' की बोली !
क्रय करने शाकों को सब, निकली जनता की टोली !

× × ×

जब इन्जेक्शन से कुछ भी फ़ायदा न मैंने देखा—
तब वैद्यराज के घर से जाकर लाया मैं गोली।

× × ×

जब मुझे देखतीं, उनके हैं गाल लाल हो जावे।
बारहो महीने क्यों वे खेला करती हैं होली !

× × ×

चल पड़े उधर हिटलर हैं हथियारों से सजधज कर,
चल पड़ूँ इधर अब मैं भी लेकर चन्दे की झोली !

× × ×

इस तरह भरी आलस में क्यों तुम बैठी हो आली,
देखो वह जरा बदल दो, मेरी तकिये की खोली !!

× × ×

दोहा-दर्शनावली !

बलिहारी गुरु आपनें, ज्यों वेनिया की घास !
जिन सालाना में कियो, देइ देइ नम्बर पास !!

× × ×

खिड़की छोटी, भीड़ बहु, सड़क तंग, बहु कार !
कहु संतो क्यूँ पाइये, सिनेमा-टिकट, विचार !!

× × ×

शिमला जावै, देहली, चहै लखनऊ जाय !
बिन रिकमेन्डेशन मिले, मिलै न सर्विस हाय !!

× × ×

मिस तो होस्टल में बसै, बन्दा नीचीबाग !
जो जाही का भावता, सो ताही सों लाग !!

× × ×

रहिमन याचकता गहे, बड़े छोट ह्वै जात !
ज्यों वोटर के द्वार पर, खड़े सेठ सरमात !!

× × ×

सूट बूट अरु कार सौं, सरै न एको काम !
जब लौं संग न एक मिस, तब लौं सभी हराम !!

× × ×

अधरन पै प्रिय पान की, यौं लालिमा सुहात !
जिमि तमाखु-टिकिया लगी रही आग सुलगात !!

× × ×

साँईं अपने चित्त की भूल न कहिये कोय।
चहैं लोग तुमको बहुत देवैं मंजु मकोय॥
देवैं मंजु मकोय, चहे सब देयँ पपीता।
चहैं पिलावैं भंग, चहैं सब करैं फजीता॥
कह गिरधर कविराय, खिलावैं चहैं मलाई।
पर निज-मन की आप कबौं कहिये नहिं साँईं॥

× × ×

मुहर्रिर-महिमा

तुम दफ्तर के साम्राज्य बीच,
फ़ाइल-समूह में गुप्त-गात !
कुर्सी पर बैठे व्याघ्र-वदन,
किसको यों दिखला रहे दाँत !
किसका बिगाड़ने चले काज ?
मद-मस्त मुहर्रिर महाराज !!

× × ×

तुम परिवर्तन करने वाले,
तुम नव नर्तन करने वाले।
तुम कितनों की ही जेबों का,
हो कल-कर्तन करने वाले !
पब्लिक-कपोत के हेतु बाज !
मद-मस्त मुहर्रिर महाराज !!

× × ×

हो एक हाथ में कलम लिए,
दूसरा हस्त हो फैलाए!
दर्शक बेचारा स्तम्भित हो,
रह जाता है निज मुँह बाये!
कैसे तव महिमा कहूँ आज!
मद-मस्त मुहर्रिर महाराज!!

× × ×

आत्म-विज्ञापन

मैं हूँ लीडर, मैं हूँ महान।
मैं हूँ पण्डित, मैं गुण-निधान !!

साहित्य-सभाओं का सदैव, होता हूँ मैं स्वागताध्यक्ष।
रुपये अब तक कर खर्च चुका हूँगा पूरा मैं एक लक्ष!

डी० लिट् डिगरी का मिला मान!
मैं हूँ लीडर, मैं गुण-निधान !!

× × ×

मेरा भाषण भूषित करता अखबारों का है प्रथम पृष्ठ!
मेरे पिट्ठू कहते फिरते—हैं याज्ञवल्क्य! ये हैं वसिष्ठ!
पर सचमुच क्या हूँ बतला दूँ, रक्खा है मैंने क्लर्क एक।
जो एम० ए० है शास्त्री भी है, लिखता मेरे भाषण अनेक।

मुझको तो हैं हर भाँति अहो!
काले अक्षर भैंस समान!
मैं हूँ लीडर, मैं हूँ महान् !!

× × ×

मासिक पत्रों में छपते हैं,
मेरे निबन्ध सारे सचित्र!
छपता है—ये हैं दानवीर,
कर दिया धरातल को पवित्र!
प्रति दिवस सैकड़ों ही रुपयों–
का करते हैं ये गुप्त दान!

पर बात वास्तविक बतलाता हूँ,
विधवाओं का हूँ विक्रेता!
उनसे ही रुपये दुह दुहकर,
बन गया जगत् में मैं नेता।
मत कभी यार ये बतलाना,
बातें औरों से सप्रमान!
मैं हूँ लीडर, मैं हूँ महान!!

× × ×

समुद यों नभ के उस भाग में,
मिल रहे क्षणदायति औ क्षणा !
जिस प्रकार मिला करते अहो,
हर एक मास जवाहर औ जिना !!

दिवस के सब काज सम्हाल के,
इधर अस्त हुए अब अर्क थे !
कचहरी अरु दफ्तर से यहाँ,
भवन लौट रहे सब क्लर्क थे !!

निकल के घर से सर को चला,
पनरुआ भरने अपने घड़े !
रुक पड़े जब लौट पड़े सभी,
रजक वृन्द लिए अपने गधे !!

पनरुआ जब था घर से कढ़ा,
बज रहे तब केवल सात थे !
सुन रहे तब थे हम रेडियो,
पलँगरी पर टाँग पसार के !!

पनरुआ यह नौकर आप का,
अजब है नर मैं अब क्या कहूँ।
न इसके चरिताम्बुधि को थहा,
कवि सकैं सनकादिक व्यास भी।

× × ×

अजब रँग, अजीब स्वभाव है,
परम रम्य अलौकिक वेष है।
सुमहिमामय गौरव-गान में,
अहह! मैं इसके असमर्थ हूँ!!

× × ×

आँखें छोटी कुछ कुछ धँसी, बाल लम्बे रसीले,
नासा मोटी चिलम सदृशी, भाल संकीर्ण भारी!
गाता है तो समझ पड़ता, कष्ट से रो रहा है,
रोता है तो सुनकर उसे गूँजता अट्टहास!!

× × ×

सोता है तो विविध विधि से नासिकारन्ध्र द्वारा,
नाना रागों सहित करता व्यक्त संगीत सारा।
सुग्रीवा को जब यह हिला जागना चाहता ही,
दीखे मानों निकटतम है मित्र सुग्रीव का ही !!

× × ×

निशा-गान

जब गगन में शान्ति का साम्राज्य छाया था निराला !
जब कि सारी प्रकृति ही ओढ़े हुए थी वस्त्र काला।
जब कि नीरवता बढ़ी, चलता समीरण सनसनाता !
उस समय मैं द्वार पर, घण्टी तुम्हारे टुनटुनाता !!

× × ×

पर न तुम जागे महाशय, हाय ! मुँह मोड़े पड़े थे !
नींद में तुम मस्त थे, या बेंच कर घोड़े पड़े थे !
बज चुका तब डेढ़ था, होटल हुए थे बन्द सारे !
काँपता मैं था खड़ा, तब द्वार पर जूता उतारे !

× × ×

अन्त में लाचार होकर, हाय स्टेशन लौट आया।
पास में पैसे नहीं थे, अन्त में रुपया भुनाया !!
रात भर में रहा वेटिंगरूम में, इस भाँति लेटा।
जिस तरह है इण्डिया के मैप ऊपर पड़ा क्वेटा !!

× × ×

पनडब्बे का आत्म-परिचय

"मैं पनडब्बा, मैं पानदान।
मुझमें कत्था चूना महान्।
मैं पाता हूँ सर्वत्र मान।
मुझसे भूषित हर खानदान॥

मैं पनडब्बा, मैं पानदान।
मुझसे ही सबकी आनबान।
मेरा ही भाई पीकदान।
उससे रहना तुम सावधान॥"

× × ×

यह कहता था वह अड़ा हुआ,
टेबुल के ऊपर पड़ा हुआ।
स्वागत मन्त्री जी की आँखों—
में कई दिनों से गड़ा हुआ॥

सब लोगों को ललचाता था,
जब पानों से भर जाता था।
उसको लखकर दर्शक गणके,
मुँह में पानी भर आता था !!

× × ×

चाँदी का था, इससे उसकी—
चाँदी थी, था पूरा निहाल।
था गोलमाल इससे उसके—
कारण था होता गोलमाल !!

× × ×

रख लिया उसे चुपके से पर,
स्वागत-मन्त्री ने खूब दाब।
तब तक खुल पड़ा यकायक वह,
हो गया सभी कुर्ता खराब !!

× × ×

उसका खुलना क्या आला था,
मानों वैरगिया नाला था।
यों कत्था गिरने लगा वेग,
ज्यों सोडा गया उबाला था !!

× × ×

कहता था—"आओ, आओ तुम !
लो पान और यह खाओ तुम !
मुझ महिमा-मय पनडब्बे को,
कुर्ते में और छिपाओ तुम !!

× × ×

कपड़े खराब कर देता हूँ,
पूरा कबाब कर देता हूँ।
धोबी का ही केवल हिसाब,
मैं बेहिसाब कर देता हूँ !!

× × ×

ठहरो, ठहरो, मैं आता हूँ।
तुमको भी मजा चखाता हूँ।
जल्दी से इस कुर्ते को अब,
धोबी के घर भिजवाता हूँ॥

× × ×

चूना, कत्था, जर्दा, पाकर,
खिलता सफ़ेद कुर्ता पाकर।
धोबिन को कर देता प्रसन्न,
धोबी के घर पर जा जाकर!!

× × ×

सरकार पा सकै पेश नहीं।
कुछ कर सकती कांग्रेस नहीं॥
मैं पाकेट के क्यों साथ रहूँ,
कुर्ता हूँ मेरा वेश नहीं॥

× × ×

चूनाघाटी

नाना के पावन पाँव पूज,
नानी पद को कर नमस्कार।
उस अण्डी की चादरवाली,
साली-पद को कर नमस्कार।

उस तम्बाकू पीने वाले के,
नयन याद कर लाल लाल।
डगडग सब हाल हिला देता,
जिसके खों खों का ताल ताल।

ले महाशक्ति प्रेस से कागज,
व्रत रखकर हिन्दुस्तानी का।
निर्भय होकर लिखता हूँ मैं,
पाकर दर्शन कृपलानी का।

मुझको न किसी का भय-बन्धन,
क्या कर सकता संसार सभी।
मेरी रक्षा करने को है,
सम्पादक का अखबार अभी।

स्याही कागज ब्लाटिंग लिए,
कर एकलिंग को नमस्कार।
स्वागताध्यक्ष करने बैठे,
अपना स्वागत भाषण तयार॥

घन घन घन घन घन गरज उठी,
घण्टी टेबुल पर बार बार।
चपरासी सारे जाग पड़े,
जागे मनिआर्डर और तार!

कविवर श्रीनारायन जागे,
दफ्तर में जगमोहन जागे।
घर घर कवि-सम्मेलन जागे,
बेढब जागे, बच्चन जागे!!

जागे कनौजिया के कपूत,
प्रेस के कम्पोजीटर जागे।
दोहे जागे, छप्पय जागे,
कविता के सब अक्षर जागे !!

लिखते लिखते अपना भाषण,
स्वागताध्यक्ष फिर ठहर गया।
लाया चपरासी वह बोतल,
जिसको था लाने शहर गया !!

चपरासी बस आया ही था,
लेकर गिलास बोतल गोली।
तब तक स्वागत मन्त्री आये,
लेकर कुछ कवियों की टोली !!

सुनकर चरमर जूतों का स्वर,
बोतल के मुँह से फाग उठा !
सब एक घूँट में पी डाला,
आँखों में छा अनुराग उठा !!

छत पर गीली चादर ओढ़े,
रजनी भर यह तो सोता था।
घर भर में बर्तन तोड़ फोड़,
मर्कट का नर्तन होता था!

सोकर उठने पर खाता था,
रसगुल्ला काला जाम यहीं।
सन्ध्या को फिर गमछा पहिने,
खाता था लँगड़ा आम यहीं !!

घर के अन्दर मदिरा पीकर,
करता था सारे अनाचार!
बाहर खद्दर का कोट पहन,
लेक्चर देता था धुवाँधार !!

वह भी कहता था जनता से,
कवियों का सम्मेलन होगा!
छायावादी कवि आयेंगे,
उनका भी मूक वदन होगा !!

बोतल से सोडा उछल उछल,
टेबुल पर ज्यों गिरता छल छल।
वह कूद कूद लेक्चर देता,
जग कहता था उसको पागल !!

चिट पर चन्दा दाताओं के,
लिखता जाता था नाम सकल।
फिर गला फाड़कर चिल्लाता था।
बतलाता था प्रोग्राम सकल।

वह आया था सम्मेलन के,
सारे दुखड़े यों रोने को।
या चरने आया साफ गुरु,
मगही पानों के दोने को !!

नल के नीचे पल पल जाकर,
कुल्ला करता मुंह धोता था।
फिर भी मुंह पर सदा के निशान,
कत्थे चूने का होता था !!

स्वागताध्यक्ष खुद लेक्चर दे,
बनता जाता था मतवाला।
मानों बच्चन सम्मेलन में,
पढ़ते हों अपनी मधुशाला !!

गाली के साथ निकलती थी,
मीटिंग से जनता मतवाली।
खाली 'हू हू हू हू' कर भी,
थे पीट रहे लड़के ताली !!

× × ×

टेबुल पर अपने हाथ पटक,
डायस के ऊपर घूम घूम।
'नॉयज' करता था व्यर्थ बहुत,
पागल मनुष्य सा झूम झूम !!

भाषण के अन्दर खों खों कर,
खाँसने अभी लगता अपार।
झाँकती उसे थीं महिलाएँ,
चिक उठा उठाकर बार बार !!

दर्शक कोलाहल करते थे,
मानों भिन्नाते भिन्न मधुप !
पर किसे सुनाई पड़ता था,
उसका वह चिल्लाना 'चुपचुप' !!

धम से गिर जाता था वह,
था तोंद नहीं सकता सम्हार ।
मुसका उठतीं महिलाएँ,
हँस उठते थे लड़के लपार !!

वह चिल्लाता ही जाता था,
कहता था 'अच्छा आज शकुन' ।
जो चन्दा दे दोगे तुरन्त,
कर देगा सारा काज शकुन !!

बिछवा दो कपड़े तूल लाल,
टँगवा दो माला फूल लाल ।
रंगवा दो कुर्सी स्टूल लाल,
रँगवा दो सारा स्कूल लाल !!

तुम दौड़ो दौड़ो रखवा लो,
कवियों का सब सामान यहीं।
तुम भागो भागो ऐ लड़कों,
लाओ सारा जलपान यहीं !!

'जलपान' शब्द यह सुनते ही,
लड़के सारे भरभरा उठे।
मुँह अन्दर पानी भर आया,
रोएँ रोएँ फरफरा उठे !!

दोनों से और कसोरों से,
बन गया वहीं पूरा होटल !
स्वागताध्यक्ष भी चकराया,
हो गया चित्त उसका चञ्चल !

तब तक सब कविगण आ पहुँचे,
ले गट्ठर लोटा डोर सकल !
लोटे ले लेकर निकल पड़े,
फौरन खेतों की ओर सकल !!

सब शयन कक्ष की जय बोले,
    दावत समक्ष की जय बोले।
सब पितृपक्ष की जय बोले,
    स्वागताध्यक्ष की जय बोले।

"पूड़ी लाओ, पापड़ लाओ,
    पेड़े लाओ, लाओ मगदल।'
'लाओ रबड़ी' यह बोल उठा,
    पुरवा पुरवा पत्तल पत्तल॥

कुछ इधर उधर की !

लूट सब अपने सिलाते रह गये।
बेखबर रुपये उड़ाते रह गये॥
पर उन्हें आया मुछन्दर वह पसन्द,
मूँछ हम अपनी मुड़ाते रह गये !!

× × ×

बम्बई में जिस तरह हैं पारसी,
मेज ऊपर जिस तरह है आरसी।
उस तरह मेरे हृदय में आप हैं,
जिस तरह है रेडियो में फ़ारसी !!

× × ×

बात भी करना उन्हें आता नहीं,
पुस्तकें छूना उन्हें भाता नहीं।
बेपढ़ी ही क्या रहेंगी उम्र भर ?
कुछ कहा मुझसे अभी जाता नहीं !!

× × ×

मूँछ की गायब निशानी खूब है!
कमर की पतली कमानी खूब है!!
वाह मिस्टर मुलमुले भण्डारकर,
आपकी सूरत जनानी खूब है!!

× × ×

इस तरह से दिल मेरा फँसती हैं आप,
पर न फन्दे में कभी फँसती हैं आप!
जब मैं नीचा सर किये रोता हूँ तब,
मुँह में कपड़ा ठूँसकर हँसती हैं आप!!

× × ×

बात मत मुझसे बनाया कीजिए,
यों नहीं झगड़ा बढ़ाया कीजिए!
देख लेगा पुलिस का वह कांस्टेबुल,
इस तरह दिल मत चुराया कीजिए!!

× × ×

एक लड़की बोली अपने बाप से—
"कर रही हूँ एक विनती आप से।
मैंने तय है मनमें अपने कर लिया,
करूँगी शादी उदय परताप से" !!

× × ×

कार, कुर्सी, खानसामा चाहिए।
दरी, टेबुल, मोमजामा चाहिए।
कुछ दिनों में देखियेगा आप भी,
उनको मेरा पायजामा चाहिए !!

× × ×

इस तरह बातें किया मत कीजिए !
नाम मेरा यों लिया मत कीजिए !!
शाम को हर रोज आकर इस तरह,
मुझको अब दर्शन दिया मत कीजिए !!

× × ×

अहो ! यह औरत बड़ी कृशकाय है !
दुर्दशाओं का घना समुदाय है !!
सिर्फ साढ़े तीन मन है तौल में,
हाय ! बेचारी बड़ी असहाय है !!

× × ×

जिस तरह नीबू में आदी चाहिए!
घर के बाहर रूम में खादी चाहिए!!
चाहिए मिलनी उन्हें अब लीडरी,
जिस तरह गदहे को लादी चाहिए!!

× × ×

आपकी बातें तो ऐसी लग रहीं,
जिस तरह रख दे नमक नासूर में!!
देह में खुशबू मगर चन्दन की है,
रह चुकी हैं आप क्या मैसूर में!!

× × ×

सिक्ख को जैसे कि साफा चाहिए!
खत को जैसे एक लिफाफा चाहिए!
'जंग सुन बोले पनारू साव यों—
हमको अब दूना मुनाफा चाहिए!!

× × ×

खटाई में पड़ा दिल है,
नहीं अमचूर से कम हो।
हुई गरचे नहीं मशहूर,
पर किस हूर से कम हो ?
जरा सा चलना लँगड़ा कर,
हजारों पर सितम ढाना,
ऐ जालिम हर तरह देखा,
नहीं तैमूर से कम हो !!

वृन्दना—

मैं तुम्हारा दास आली।

था बुलाने को समुत्सुक, तुम्हें लाने को समुत्सुक,
पर न जाने क्या हुआ, तुम क्यों यकायक यों गयीं रुक,
क्या न माने ससुर साहब, या न मानीं सास आली ?

बीसियों भेजे उबादे, एक भी क्या. काम आया ?
हर दफा बैरंग वापस, पनहुआ हज्जाम आया।
कर रहे सब मित्रगण मेरा अमित उपहास आली !

छूट सब खाना गया है, सिर्फ पीता दूध दिन भर,
हाथ से छूता न दाना, सिर्फ बेदाना चबाकर,
आज दो दिन से कठिन हूँ कर रहा उपवास आली !

हाँ हुए दस साल जब शिवरात्रि के दिन दोपहर तक,
होस्टल में व्रत रहा, फिर आमलेट खाये चकाचक,
क्योंकि गायब हो रहे थे होश और हवास आली !

इस तरह व्रत और उपवासादि से पूरा अपरिचित।
कभी न तप में रत हुआ हूँ, स्नेह का ले बल अपरिमित।
हो तुम्हारी कृपा पाकर पूर्ण प्रथम प्रयास आली ! मैं० ॥

स्वीकृति

जुदाई में तुम्हारी हम न यों बेजार हो जाते !
अगर तुम पिछले हफ्ते में न थानेदार हो जाते !!

× × ×

अगर कोयले से कुछ इस देह की रंगत भली होती,
यकीं मानो कि हम भी थोड़े बरखुदार हो जाते !!

× × ×

न फिर यों इश्क़ की दुनियाँ में वादों की क़दर होती;
अगर माशूक़ जिन्ना की तरह से मक्कार हो जाते !!

× × ×

अगर कांग्रेस मिनिस्ट्री ने न स्तीफ़ा दे दिया होता,
न मेरे साले साहब आजकल बेकार हो जाते !!

× × ×

मलाभत जो न कर यों पीटतीं हमको पढ़ाइन तो,
रुपनियाँ के सबब कबके ही हम कलवार हो जाते !!

× × ×

गोस्वामी जी के दोहों के नये रूप

बिना पान सब व्यर्थ है,
जानत सकल जहान।
तब लग नर इन्सान है,
जब लग मुँह में पान !! १ ॥

पान हीन मुख यों लसै, जैसे सूखा सोंठ।
तासौं बुधजन पान सौं, रखैं लाल निज ओंठ ॥ २ ॥

या दुनिया में आइकै,
कर लेवै दो काम।
देवै चन्दा लाट को,
लेवै पद 'सर' नाम ॥ ३ ॥

"तुलसी" चन्दा के दिये, सुख उपजत चहुं ओर !
बसीकरन यह मन्त्र है, तजौ कृपनता घोर ॥ ४ ॥

आकांक्षा—

मैं सिनेमा स्टार हूँगी!
ब्याह शादी के बखेड़ों में नहीं हर्गिज पड़ूँगी!
पर गृहस्थी के झमेलों में नहीं बिलकुल फसूँगी॥
पर कहीं कोई डिरेक्टर या कि ऐक्टर ही निराला,
मिल गया मन रूप सुन्दर सब तरह घर का उजाला,
तो न कोई हर्ज, मैं उससे सिविल मैरेज करूँगी॥
और वह होगा मनस्वी मम हृदय इच्छानुगामी,
स्वामिनी गृह की रहूँगी, नित्य वह देगा सलामी,
तो मधुर मधु से अधर के मैं चषक उसके भरूँगी॥
किन्तु उसने तनिक जो परवाह की मेरे न डर की,
या कि मेरे हुक्म में क्षणमात्र को भी ना नुकुर की,
जण्ट साहब की अदालत में तुरन्त तलाक दूँगी॥
मैं सिनेमा-स्टार हूँगी॥

पैरोडी–

"लग लग लग लग" हम जग का मग,
नादित करते भग भग लग लग।

हम पुच्छ हीन, हम दीर्घ-पुच्छ,
हम मुच्छ-हीन, हम दीर्घ-मुच्छ,

लेकर गट्ठर, बिस्तर, कम्बल,
हम चलें भाग, चञ्चल प्रतिपल,

हम पटु द्रुमचर, कटहे बन्दर!
कपड़ों को हर लाते तरु पर!!

फिर पूजतार्थ होते आकुल!
देते, चक्के, पौने, कलछुल!!

बाहक

हम खाने के हैं शायक, मज़हब से नहीं वाक़िफ़,
गर मण्डा हुआ तो क्या, गर अण्डा हुआ तो क्या।

× × ×

मैं चाय के पीने से थक हूँ न कभी सकता,
गर प्याला हुआ तो क्या, गर अण्डा हुआ तो क्या ?

× × ×

ये पब्लिक़ में, जहीं होता है, मुझपै वार करती हैं,
अब इससे और ज्यादा कुछ मुसीबत हो नहीं सकती।
हुई जब खुदही ये बेशर्म, फिर अब है क्या कहना,
रज़ीलों से क़यामत तक, शराफ़त हो नहीं सकती॥

कबीर की साखी

साहेब से सब होत हैं, बन्दे तें कछु नाहिं।
नाई को बाभन करै, बाभन नाई माहिं॥

नेता ते मन्त्री भया, सो होइ गया विलाय।
जो कछु था सोई भया, अब कुछ कहा न जाय॥

नेता ऐसा चाहिए, जैसा रूप सुभाय।
चन्दा सारा गहि रहै, देय रसीद उड़ाय॥

यह घर थानेदार का, खाला का घर नाहिं।
नोट निकारै, पग धरै, तब पैठे घर माँहि॥

'अमन' समै सुमिर्यो नहीं, 'रायट' में अब याद।
कैसे अब उस सेठकी, जएट सुनै फरियाद॥

गये खरीदन आम वह, ले रुपया बेकाम।
दुविधा में दोऊ गये, पैसा मिला न आम॥

कबिरा 'मिस' के साथ में पीकर रहिए चाय।
खीर खाँड़ भोजन मिले, घरनी संग न जाय॥

टिको धर्मशाला चहै, घर चाहै ससुराल।
बिन होटल भोजन किये, मिलै न अच्छा माल॥

या सिनेमा में आइके, छाँड़ि देय निज इल्म।
देखन हो तो देखिलै, चली जायगी फिल्म॥

चन्दा और पद-ग्रहण की जब लग मन में खान।
पटवारी औ पन्त हैं दोनों एक समान॥

सबै चहत हैं लीडरी, लीडर चहैं न कोय।
कह कबीर 'लीडर' भजै, तुरत लीडरी होय॥

गाँधी जिन्ना एक से, बिरला जानै कोय।
लाट मिलन हित विकल दोऊ, आपुस मेल न होय।

खोद खाद जबड़ा सहै, फटा कूट वस प्रूफ।
कुटिल वचन शौहर सहैं, और न सहैं हरूफ॥

गीत—

तश्तरी में पान आया!
या तपस्वी के लिए साकार हो वरदान आया!
देखकर सबकी निगाहें खिल उठीं, सब लोग बोले—
"इधर लाओ तश्तरी" (यों सब जनों के चित डोले)।
शान्तसागर में कहाँ से यह तरल तूफान आया। तश्तरी!
चार बीड़े पान लेकर, मैं लगा उनको चबाने।
पर चला ज्योंही मधुर स्वर में सुकविता को सुनाने।
चू पड़ी एक पीक कुर्ते पर, मुझे तब ध्यान आया! त०!
पान तो खाना भला है, पीक का चूना बुरा है।
देखने की चीज को, सच मानिये छूना बुरा है।
यही हर एक ने कहा, सारा जगत में ज्ञान आया!
तश्तरी में पान आया!!

प्यारी तुम अजीब औरत हो !

क्षण में क्रोध, प्यार फिर क्षण में,
क्षण में गज, बिलार फिर क्षण में,
क्षण में हो सवार तुम सर पर,
क्षण में ही चरणों में नत हो !
प्यारी तुम अजीब औरत हो !!

कभी रूठतीं, कभी मनातीं,
कभी रुलातीं, कभी हँसातीं,
कभी खिलातीं छप्पन व्यञ्जन,
कभी करातीं निर्जल व्रत हो !
प्यारी तुम अजीब औरत हो !

कैसे मैं तव गुण गाऊँ,
शक्ति कहाँ से इतनी लाऊँ,
बस तव चरण-युगल का आराधन,
मुझ लायक लतिहर की लत हो !
प्यारी तुम अजीब औरत हो !!

दर्दे दिल--

जो बिगड़ता था यारहाँ मुझसे,
उसको बेशक मना लिया मैंने!
दिल में शायद कभी तो तुम बैठो,
दिल को बैठक बना लिया मैंने!!

× × ×

उठना बिस्तर से खुद ही मुश्किल था,
नाज उनका उठा लिया मैंने!
गड़ती उनको थी मूँछ यह मेरी,
मूँछ को ही मुड़ा लिया मैंने!!

× × ×

अब न हिन्दू से है मुहब्बत ही,
औ न मुस्लिम से कोई नफ़रत!
दूर अलईपुरा मुहल्ले में,
अपना घर है बना लिया मैंने!!

× × ×

धूम मेरी मची है शोअरा में,
खूब अशयार कह रहा हूँ मैं।
बात यह है कि 'चोंच' साहब के,
नोट बुक को चुरा लिया मैंने !!

× × ×

जब कि औरों ने गोलियाँ खायीं,
धूप में हो खड़े पिकेटिंग की।
मैं था चन्दा वसूलता जाकर,
घूस से घर अभी बना लिया मैंने !!

× × ×

जब कि कैबिनेट उधर लगी बनने,
नाम मेरा लिया गया पहले !
अब बनाने में क्या रहा बाकी,
जब कि कैबिनेट बना लिया मैंने !!

× × ×

दूर उनका है घर अभी तो हम,
चल पड़े हैं यही समझ रक्खो।
ख्याल मुश्किल का छोड़कर मुश्किल,
अब यों आसाँ बना लिया मैंने।

× × ×

जब से सम्मेलनों में जा जाकर,
कविता पढ़ने लगा हूँ, आफ़त है!
अपने को है निगाहे पब्लिक में,
एक तमाशा बना लिया मैंने!!

उल्फ़त

मुझको क्या तू ढूँढ़े रे बन्दे ! मैं तो तेरे पास में।
ना मैं सिनेमा, न मैं थियेटर, न टिकट, ना फ्री पास में।
ना गांधी में, ना जिन्ना में, ना राजेन्द्र, सुभाष में।
ना खद्दर में, ना चरखा में, ना मोहर, चपरास में।
ना प्रोफेसर में, ना टीचर में, ना स्टुडेण्ट, ना क्लास में।
ना मलमल में, ना मखमल में, नहीं सिल्क या ग्लास में।

× × ×

मुझे ढूँढना चाहे जो तू पलभर की तालास में।
तो तू जा ससुरार रे बन्दे, ढूँढ़ ससुर औ सास में॥

माला की प्रकाशित पुस्तकें

ऐतिहासिक

२) झाँसी की रानी
१॥) मेवाड़ का इतिहास
१) प्रतापी आल्हा और ऊदल
१।) अमरसिंह राठौर
१) मिश्र की स्वाधीनता का इतिहास
१) छत्रपति शिवाजी
१॥) संसार के महान् राष्ट्रनिर्माता
१॥) मेरी काश्मीर यात्रा
१) महाराणा प्रताप
१) पृथ्वीराज चौहान

उपन्यास

१) विप्लवी वीरांगना
१) त्याग
१॥।) रहमदिल डाकू
१॥) मायावी संसार

१॥।) हाहाकार
१॥) जीवन का शाप
१॥) नदी में लाश
१॥) वेदना
१।) ममता
१।) राजकुमारी
१) मजदूर का दिल
१) होटल में खून
१) प्रेम का पुजारी
॥।) ठोकर

हास्यरस

१) महाकवि सांड़
१) पानी पांड़े
१) गुरुघंटाल
१) एड़ी बनाम सोंटा
१) गल्पमटोल
१) कादम्बिनी (गंभीर)
॥।) मेरी फजीहत
॥।) खरी-खोटी

युवकोपयोगी

१॥) स्वास्थ्य और व्यायाम
१) सरल संस्कृत प्रवेशिका
१) हमारा जीवन सफल कैसे हो?
१) सफलता के सात साधन
१) उन्नति का मार्ग
॥) शान्ति की ओर

धार्मिकः—

५) उपनिषत्समुच्चय
॥) पूर्णिया शास्त्रार्थ
॥।) शुद्धि सनातन है
॥।) वैदिक वर्ण व्यवस्था

प्रेस में-

हास्यरसावतार 'चोंच' जी का सबसे चोखा चमत्कार

हिन्दी-साहित्य में हड़कम्प मचानेवाला

हास्यरस का अनोखा

महाकाव्य

चूनाघाटी

(१२ सर्गों में समाप्त)

यदि हँसते हँसते आपके पेट में बल पड़ जावें, तो हम उसके जिम्मेदार नहीं।

मूल्य—सजिल्द पुस्तक का एक रुपया

उलटफेर

प्रेस के भूतों की लीला से पुस्तक में कुछ मजेदार अशुद्धियाँ रह गयी हैं, पाठक उनमें इस प्रकार उलटफेर कर लें—

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	६	विन	बनि
२	५	द्रुम	दुम
१०	१	कसे	कैसे
१३	१	मुटनी	मुटानी
४९	६	देखकर	देख
,,	,,	ही	दिया
६०	पाठक ६० पृष्ठ के बाद एकदम से ७० वें पृष्ठ पर आजाने की कृपा करें, जहाँ इस कविता का शेषांश है।		
६९	१२	सप्रमान	सावधान
९३	६	तरह से	तरह
९७	४	अएडा	हएडा
९९	९	कटाकूट	काटकूट
१०५	६	क्लास	पलास
१०७	७	'सज्जन' के बाद 'मरें' छूट गया है	